कविता

शशि प्रकाश

नयी सदी में भगतसिंह की स्मृति

एक दुर्निवार इच्छा है
या एक पागल-सा संकल्प
कि हमें तुम्हारा नाम लेना है एक बार
किसी शहर की व्यस्ततम सड़क के बीचो-बीच
खड़े होकर
एक नारे, एक विचार, एक चुनौती
या एक स्वगत-कथन की तरह,
जैसे कि पहली बार,
और अपने को एकदम नया महसूस करते हुए।
नहीं,
यह कोई कर्ज उतारना नहीं,
देश की छाती से कोई बोझ हटाना भी नहीं
विस्मृति की ग्लानि का
(वह यूं कि जब स्मृति थी
तब भी कितना था परिचय वास्तव में?)
यह तो महज
अंधेरे में रख दिये गये एक दर्पण के बारे में
कुछ बातचीत करनी है अपने-आप से।
सोचना है कि अंधेरे तक
किस तरह ले जाया गया था वह दर्पण
और किस तरह अंधेरा लाया जा रहा है आज
हर उस जगह
जहां कोई दर्पण है।
जहां भी है परावर्तन की सम्भावना,
किरणों का प्रवेश वर्जित है
और कहीं आग लग रही है
कहीं गोली चल रही है।[1]

●

हमें तुम्हारा नाम लेना है
उठ खड़े होने की तरह,
या एक प्रत्याक्रमण की तरह,
देश को धकापेल बनाने या
वाशिंगटन डी.सी. का कूड़ाघर बनाने की
बर्बर-असभ्य या
कला-कोविद कोशिशों के विरुद्ध।
नहीं, यह कोई भाव-विह्वल श्रद्धांजलि नहीं,
यह नीले पानी वाली उस गहरी झील तक
फिर एक यात्रा है
उग आये झाड़-झंखाड़ों के बीच
खो गया रास्ता खोजने की कोशिश करते हुए,
या शायद, कोई भी राह बनाकर वहां तक पहुंचने
की एक जद्दोजहद भर है,
या शायद ऐसा कुछ
जैसे हम किसी विचार के छूटे हुए सिरे को
पकड़ते हैं
आगे खींचने के लिए।

●

हमें तुम्हारा नाम लेना है
इसलिए नहीं कि तुम्हारे नामलेवा नहीं।
संसद के खम्भे भी तुम्हारा नाम लेते हैं
बिना किसी उच्चारण-दोष के
और वातानुकूलित सभागारों में
तुम्हारी तस्वीरें हैं और फूलमालाएं हैं
और धूपबत्तियों का खुशबूदार धुआं है।
एक ख्यातिलब्ध राजनयिक कहता है
कि तुम प्रयोग कर रहे थे क्रान्ति के साथ
और बाजार सुनता है
और रक्तसने हत्यारे हाथों से
विमोचित हो रही है
तुम्हारी शौर्य-गाथा पर आधारित नई बिकाऊ किताब
और एक बूढ़ा विलासी पियक्कड़ पत्रकार
अपने अखबारी कॉलम में तुम्हें याद करता हुआ
अपने पूर्वजों के पाप धो रहा है।

●

हमें तुम्हारा नाम लेना है
कि वे लोग ले रहे हैं खूब तुम्हारा नाम
जिन्हें खतरा है
लोगों तक पहुंचने से तुम्हारा नाम
अपने सही अर्थों में।
इसलिए सुनिश्चित ऐतिहासिक अर्थों का
संधान करते हुए
हमें फिर थकी हुई नींद में डूबे
घरों तक जाना है लेकर तुम्हारा नाम।
कई बार हमें विचारों को कोई नाम देना होता है
या कोई संकेत-चिन्ह
और हम मांगते हैं इतिहास से ऐसा ही कोई नाम
और उसे लोगों तक
विचार के रूप में लेकर जाते हैं।

●

हमें तुम्हारा नाम लेना है
एक बार फिर
गुमनाम मंसूबों की शिनाख्त करते हुए
कुछ गुमशुदा साहसिक योजनाओं के पते ढूंढ़ते हुए
जहां रोटियों पर मांओं के दूध से

अदृश्य अक्षरों में लिखे
पत्र भेजे जाने वाले हैं, खेतों-कारखानों में
दिहाड़ी पर खटने वाले पच्चीस करोड़ मजदूरों,
बीस करोड़ युवा बेकारों,
उजड़े बेघरों और गिरफ्तार आधे आसमान की ओर से।
उन्हें एक दर्पण, नीले पानी की एक स्वच्छ झील,
एक आग लगा जंगल और धरती के बेचैन गर्भ से
उफनने को आतुर लावे की पुकार चाहिए।
गंतव्य तक पहुंचकर
अदृश्य अक्षर चमक उठेंगे लाल टहकदार
और तय है कि
लोग एक बार फिर इंसानियत की रूह में
हरकत पैदा करने के लिए सोचने लगेंगे।[2]

●

तुम्हारा नाम हमें लेना है
उस समय के विरुद्ध
जब सजीव चीजों में निष्प्राणता भरी जा रही है
एक उज्ज्वल सुनसान में
जहां रहते हैं शिल्पी और सर्जक बस्तियां बसाकर,
और कभी दिन थे, जब हालांकि अंधेरा था,
पर अनगिन कारीगर हाथों ने
मिट्टी, राख, रक्त, पानी, धूप और
कामनाओं-संकल्पों-स्मृतियों-स्वप्नों को गूंथकर
गढ़े थे लोग
विचारों ने बनाया था जिन्हें सजीव-गतिमान।

●

तुम्हारा नाम हमें लेना है
कि अधबने रास्ते कभी खोते नहीं,
हरदम कचोटते रहते हैं कि वे दिलों में
जागते रहते हैं
और पीढ़ियों तक धैर्यपूर्ण प्रतीक्षा के बाद
वे फिर आगे चल पड़ते हैं
और जब भी
पहुंचते हैं अपनी चिरवांछित मंजिल तक,
तो वहां से
एक नई राह आगे चलने लगती है।

●

तुम्हारा नाम हमें लेना है
विस्तृत और आश्चर्यजनक सागर पर विश्वास करते हुए
और इतिहास का लंगर छिछले पानी में डालने की[3]
कोशिशों के खिलाफ,
और विचारों के खिलाफ जारी
चौतरफा युद्ध के खिलाफ,
और उम्मीद जैसे शब्दों को
संग्रहालयों में रख देने के फैसलों के खिलाफ।
... या तो हमें कविता में लानी है यह बात
या फिर किसी भी तरह की काव्यकला के
आग्रह के बिना ही कह देना है कि
यह सत्ता पलट देनी होगी
जो पूरी नहीं करती हमारी बुनियादी जरूरतें
और छीनती है हमारे बुनियादी अधिकार[4]
और विद्वज्जन हैं कि मुख्य सड़कें छोड़कर
पिछवाड़े की गन्दगी और कूड़े भरी गलियों से होकर
आ-जा रहे हैं, ढूंढ़ते हुए कविता का अर्थात्
मेरकूरी अव्देविच की तरह[5]
और तकिये में सोने की गिन्नियां छुपाये
तीर्थाटन पर निकलने को तैयार हैं भिक्षुवेश में
यदि समय कोई ऐसा-वैसा आ जाये तो।
...बल्कि सबसे अच्छा तो यह होगा कि
बेहद ईमानदार निजी दुखों, प्यार, झाग, आदिम सरोकारों,
शब्दों, तरलता, मौन, चिन्तन के अकेलेपन,
जनता के सुनसान, पुरस्कार-कामना-बोझिल मन,
सीढ़ियों, रस्सियों, नकबजनी के औजारों और
निर्लिप्त खबरों से भरी
धूसर, चमकीली या सांवली-सलोनी निर्दोष सी कविताओं के
पाठ के बाद, किसी शाम,
जब अपनी पारी आये
तो बस दुहरा दिये जायें
तुम्हारे ये सीधे सादे शब्द :
''इंकलाब जिन्दाबाद।''

(22-23 मार्च, 2000)

सन्दर्भ :

1. मुक्तिबोध की कविता 'अंधेरे में' की पंक्तियां : ''...कहीं आग लग गयी, कहीं गोली चल गयी''

2. भगतसिंह के उस प्रसिद्ध कथन का सन्दर्भ कि ''जब गतिरोध की स्थिति लोगों को अपने शिकंजे में जकड़ लेती है'' तो इस परिस्थिति को बदलने के लिए जरूरी होता है कि ''क्रान्ति की स्पिरिट ताजा की जाये, ताकि इंसानियत की रूह में हरकत पैदा हो।''

3. 'नौजवान भारत सभा' के घोषणापत्र में उद्धृत कविता की पंक्तियां हैं : ''लंगर ठहरे हुए छिछले पानी में पड़ता है
विस्तृत और आश्चर्यजनक सागर पर विश्वास करो
जहां ज्वार हरदम ताजा रहता है—
और शक्तिशाली धाराएं स्वतंत्र होती हैं—''

4. 5 मई, 1930 को विशेष ट्रिब्यूनल को लिखे अपने पत्र में भगतसिंह ने इसी आशय की बात कही थी।

5. फेदिन की प्रसिद्ध उपन्यास-त्रयी ('पहली उमंगें' और 'आग्नेय वर्ष' भाग एक और दो) का एक कंजूस व्यापारी पात्र।